

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१६/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरु जी को नमस्ते। परमात्मा गुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप में बैठे... देखिए अपना मूलस्वरूप.. अनुभव करें...आत्मा के मूलस्वरूप से लाइट निकल रही है... देखिये उस लाइट को... अनुभव करें अपनी मूलस्वरूप स्थिति का... मूलस्वरूप अवस्था... देखिए अपना मूलस्वरूप.. मूलस्वरूप.. मूलस्वरूप.. मूलस्वरूप.. अनुभव कीजिए मूलस्वरूप.. मूलस्वरूप.. मूलस्वरूप.. बेहद सुंदर दिव्य आत्म का यह वह स्वरूप है... यह मैं हूँ ... सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप को स्पष्टता से देखें...

यह मूलस्वरूप एक सहज अवस्था है। उसमें स्थित होने में या उसे देखने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। अति सहज रूप से अपने मूलस्वरूप का अभ्यास करें। जब-जब समय मिले एक सेकंड, दो सेकंड, पांच सेकंड, दस सेकंड बैठकर इस मूलस्वरूप अवस्था का अभ्यास करें। यह एक ऐसी अवस्था है। जिसमें बेहद खुशी है, आनंद है, मौज है। क्योंकि यही मूलस्वरूप आत्मा का सत्य स्वरूप है।

आत्माएं शरीर में पार्ट बजाते-बजाते स्वयं को भूल गयी हैं। स्वयं के अस्तित्व को भूल गयी और वह शरीर को ही अपना अस्तित्व समझ बैठी हैं। इसलिए दुख है, परेशानियां हैं, चिंताएं हैं, तकलीफ है। किसको है? बाहरी अस्तित्वों को। और यह सब कुछ तब तक रहेगा जब तक आत्माएं अपने मूलस्वरूप में नहीं आएंगी। आत्मा जब जब अपनी मूलस्वरूप स्थिति में रहती है तब तक उसे संपूर्ण होश रहता है कि मैं आत्मा इस शरीर में फलाना पार्ट बजा रही हूँ। फिलहाल इस समय में मेरा यह प्रोफेशन है। मैं इस प्रोफेशन के पार्ट में पार्ट बजा रही हूँ। पर आत्मा को जब होश ही नहीं रहता है, तो वह प्रोफेशन ही अपना जीवन समझ बैठती है। जो सत्य नहीं है उसे सत्य समझकर हर प्रकार के दुख, परेशानियों को अपने ऊपर हावी करा देती है।

आत्मा अपनी यात्रा को अगर देखे तो उसे संपूर्ण रूप से सदा यह स्पष्ट रहेगा। गर्भ में, शरीर में आत्मा ने प्रवेश किया। शरीर गर्भ से बाहर आया। उसके माता-पिता बनें, भाई बहन बनें, मित्र संबंधी बनें, घर परिवार बनें, फिर धीरे-धीरे नौकरी-धंधा, प्रोफेशन, करियर, शरीर के जो भी एंटरटेनमेंट के साधन हैं उसमें अटैच है, घूमना फिरना बाहरी इच्छाओं को पूर्ण करने के पीछे लगना, बाहरी खुशियों को, बाहरी मौज को, बाहरी आनंद को ढूँढना। फिर वह, किसी वह व्यक्ति में हो, कोई स्थान में हो, कोई पदार्थ में हो, कोई वस्तु में हो। एक इच्छा पूरी हुई दूसरी प्रकट हो गई उसके पीछे उसको पूर्ण करने के लिए लगना। ऐसे करते-करते आत्मा पार्ट में पूर्ण रूप से फस गयी। आत्मा ने अपनी ऊर्जा इतनी सारी यात्रा में खर्च कर दी। अंत में क्या हाथ में आएगा पूरे जीवन काल में पार्ट बजाते-बजाते बाहरी रूप से दूसरों के प्रति जो अच्छे कर्म किए फिर वह किसी को सुख देना हो, मदद करना हो, संभाल या बाहरी रूप से किसी को दुख देना हो, या स्वार्थ भाव से अपनी इच्छाओं को गलत तरीके से पूर्ण करना हो, इसका फल स्वरूप क्या होता है? पुण्य का खाता और पाप का खाता। फिर उसके आगे क्या? उस यात्रा में उस शरीर में पार्ट पूरा हुआ। आत्मा को होश ही नहीं आया कि वह कौन है? किस लिए इस धरा पर है? फिर जो पुण्य और पाप का खाता बना उस अनुसार अगली यात्रा फिर से गर्भ में शरीर में प्रवेश हुए। इन सब में आत्मा का कल्याण कहाँ है? कल्याण के लिए कहाँ समय है? या सिर्फ पाप और पुण्य के खाते में ही आत्मा को जन्म-मरण के चक्र में आना है। यह आत्मा जागृत होके अपनी यात्रा, कल्याण की यात्रा की ओर बढ़ पाए। अगर आत्मा जागृत नहीं हुई तो ऐसे ही उसको बार-बार जन्म लेने होंगे। अपना पाप-पुण्य देखना होगा, फिर से जन्म-मरण में आना होगा। और अगर यह जन्म-मरण फिर से संगम युग के समय में शुरू रहा तो आत्मा की गति क्या होगी? क्योंकि इस ही युग में आत्मा को कल्याण के लिए जागृत होना ही पड़ेगा। अन्यथा आत्मा के हाथ में कुछ नहीं रहेगा।

कल्याण और परिवर्तन यह सिर्फ इस ही समय में कर सकते हैं और समय सदा का किसी का भी नहीं होता। हर एक बात समय में पूर्ण हो जाती है। फिर वह कोई युग का परिवर्तन हो या कोई और बातें हो। समय कभी किसी के लिए नहीं रुकता। क्योंकि समय को भी परमात्मा की श्रीमत मिली है।

उतने ही समय में आत्माओं को परिवर्तन होना होगा। इसलिए समय लिमिटेड है। आत्माएं हर रूप से हर प्रकार से जागृत हो जाए। आपके पास कितना समय है यह आपको भी पता नहीं, जिस शरीर में आप पार्ट बजा रहे हो। अभी आपको यह ज्ञान, समझ मिल रही है। की इस ही समय में हमें हमारा कल्याण करना है। हम आत्मा को हमारा परिवर्तन करना है। अगर अचानक शरीर की मृत्यु हो जाती है तो आगे क्या? आत्मा फिर कब गर्भ में कितने समय तक फिर से रहेगी? फिर कब वह छोटे शरीर में बाहर आएगी? कब वह शरीर बड़ा होगा? कब उसे वह समझ मिलेगी? और कब फिर से वह ज्ञान ले पायेगी तब तक शायद संगम पूरा भी हो जाए। इसलिए जो होना है वह अचानक ही होना है।

परमात्मा की शक्ति, परमात्मा की ताकत, परमात्मा की मदद समय में सभी को मिलती है। पर हर किसी के ऊपर वह निर्धारित है कि वह परमात्मा की शक्ति को, परमात्मा की मदद, को परमात्मा की ताकत को कितना अपने अंदर भरते हैं और अपना परिवर्तन करते हैं। परमात्मा का भी एक कैलकुलेशन है। उतने समय में वह आत्माओं को, सभी को शक्ति, ताकत, समझ प्रदान करेंगे। उसके बाद जो जितने समय के अंदर परिवर्तन होंगे वह होंगे। उसके बाद किसी को दोबारा मौका कभी नहीं मिलता। आत्माओं को लगेगा परमात्मा रहम का सागर है, करुणा का सागर है। वह रहम और करुणा उस लिमिटेड समय में सब करता है। पर समय पूरा होने के बाद परमात्मा भी नहीं रुकेगा किसी के लिए। उसको उसका कार्य पूरा करना है।

इसलिए सभी आत्माएं सजग हो जाए। समय में अपने आप को जागृत करें। जागृत करना माना क्या? आपको अपने मूलस्वरूप में आना। आप जो बाहरी अपनी पर्सनालिटी को समझ बैठे हो वह भ्रम की पर्सनालिटी है। जब तक आत्मा अपने मूलस्वरूप में ही नहीं। उसके मन में चलने वाला हर विचार मायावी है, भ्रम का है। उसके बुद्धि में दिखने वाला हर व्हिजन मायावी है, भ्रम का है। उसके जो संस्कार इमर्ज होते हैं वह मायावी है। इसलिए जब तक आत्मा अपने मूलस्वरूप में नहीं है, अपने स्थिति में नहीं है, तब तक मन, बुद्धि, संस्कार को भी, जो भी उनके अंदर हो रहा है वह सारा भ्रम है, असत्य है। वह चलाने वाला कोई और मायावी अस्तित्व है। हर कोई इसे समझ ले।

आत्मा को परिवर्तन करने के लिए उसको उसके स्थिति में आना ही होगा। आत्मा स्थिति में ही नहीं है और बाहरी परिस्थिति के बारे में वह कितना भी मन के द्वारा विचार चले वह सारे झूठ हैं, मायावी हैं। आत्मा स्थिति में होगी तो हर परिस्थिति में उसे समझ मिलती जाएगी। उसे क्या करना है? उसको कभी समझ देनी ही नहीं पड़ती। आत्मा की रचना ही इतनी वंडरफुल है। बस आत्मा अपने स्थिति में रहे। अपने आप वह अपने मन के विचारों को, बुद्धि के व्हिजन को, संस्कारों को साक्षी रूप से देख पायेगी। कि यह जो मन में चल रहा है यह मेरा नहीं है क्योंकि मैं आत्मा अति दिव्य हूँ। जितना-जितना साक्षी रूप अवस्था में आत्मा जाएगी उतना-उतना मन, बुद्धि, संस्कार शुद्ध होते जाएंगे। जिस क्षण आत्मा देखती है कि मन में विचार देने वाला कोई और अस्तित्व है, तत्क्षण वह अस्तित्व निकल जाता है। इतनी आत्मा में ताकत है। पर यह कब होगा? जब आत्मा स्थिति में रहेगी। संपूर्ण होश में रहेगी। हर प्रकार से आत्माओं को समझ मिलती जाएगी। मुझे क्या करना है? क्या नहीं करना है। हर प्रकार के मायावी अस्तित्वों को वह ऐसे ही क्षण में मुक्त कर पायेगी।

आत्मा के पास परमात्मा ने विराट ताकत दी है। पर वह अनुभव कब होगी? जब आत्मा अपनी स्थिति में होगी। आत्माएं सदा ध्यान रखना जब-जब स्थिति में नहीं होते, तब-तब आपके मन-बुद्धि-संस्कार के द्वारा या आपके स्थूल कर्मेन्द्रियों के द्वारा जो कुछ भी कर्म घटित होते हैं। फिर वह सब कुछ कोई मायावी आप ही के मायावी अस्तित्वों से होते हैं, उन सबका बोझा आत्मा को ही चुक्त करना पड़ता है। वहां पर किसी भी प्रकार से कोई एक्सक्यूज नहीं होता। क्योंकि सारे मायावी अस्तित्व आप ही ने बनाए हैं। इसलिए आत्मा के पास बहुत काम है। उसको सभी मायावी अस्तित्वों को मुक्ति देनी है। जितना-जितना आत्मा मूल स्वरूप में आती जाएगी उतना-उतना एक-एक मायावी अस्तित्व मुक्त होते जाएंगे। सभी आत्माएं चेक करें, जब-जब आत्मा स्थिति में नहीं होती तो कौन-कौनसे विपरीत संस्कार या विपरीत विचार या विपरीत व्हिजन आते हैं? जो कुछ भी विपरीत आ रहा है उतने सारे मायावी अस्तित्व है।

हर कोई चेक करें, कितना विपरीत संकल्प के रूप में, विचारों के रूप में, धिजन के रूप में संस्कारों के रूप में दिन भर चलता है। आत्मा यह सब चेकिंग तब ही कर पाएगी जब आत्मा स्थिति में रहेगी और साक्षी होके अपने हर एक विचार को देख पाएगी, धिजन को देख पाएगी, संस्कार को इमर्ज होते देख पाएगी, पर आत्मा स्थिति में ना होने के कारण उसको किसी भी रूप से कोई विपरीतता रियलाइज भी नहीं होती क्योंकि आत्मा स्थिति में नहीं है। वहां पर मायावी अस्तित्व ने पूरा कंट्रोल ले लिया है। और यही मायावी अस्तित्व सदा यही सिद्ध करता है कि मैं सही हूं। मैं गलत हूं यह जो दिल से स्वीकार करता है, वह आत्मा करती है और मैं सही हूं, यह जिससे प्रदर्शित होता है, वह संपूर्ण मायावी अस्तित्व है।

इसलिए आज का सभी के लिए एक होमवर्क है। अपनी चेकिंग करना। स्थिति में स्थित होकर मेरे अंदर कौन-कौनसे मायावी अस्तित्व अभी भी है। हर प्रकार से हर रूप से देखें। फिर वह मन बुद्धि संस्कार को चलाने वाले हो या आपके स्थूल कर्मेन्द्रियों को चलाने वाले हो, जो कर्म संबंध में व्यवहार में आते हैं। फिर वह आँखों से कुछ देखना हो, मुख से कुछ बोलना हो, कानों से कुछ सुनने वाला हो। आत्मा संपूर्ण होश में रहे। अपने हर एक कर्मेन्द्रियों को देखे की उसको क्या देखना पसंद है? क्या सुनना पसंद है? क्या बातें करना पसंद है? जितना जितना स्थिति में रहेंगे उतना उतना सभी मायावी अस्तित्व एक एक करके आपके सामने आते जाएंगे। इस प्रकार से सोचना यह तो आत्मा नहीं कर सकती, यह तो गलत सोच है। यह कब रियलाइज होगा जब आत्मा स्थिति में होगी और जैसे रियलाइज होगा वह अस्तित्व मुक्त हो जाएगा। इस प्रकार से बात करना, यह तो आत्मा का गुण नहीं है। जैसे रियलाइज होगा वह अस्तित्व मुक्त होगा। इस प्रकार से देखना सुनना, यह आत्मा के गुणों में नहीं आता। जैसे रियलाइज होगा मायावी अस्तित्व मुक्त हो जायेगा पर यह बैठकर खुद की चेकिंग हर एक आत्मा को करनी होगी और यह चेकिंग सिर्फ एक दिन की नहीं है यह चेकिंग अंत तक करनी होगी क्योंकि आत्मा ने जन्मों जन्म शरीर में पार्ट बजाए हैं। बहुत सारे मायावी अस्तित्वों को बनाया है। तो इन सभी मायावी अस्तित्वों को चेक करके रियलाइज करके मुक्ति देनी होगी। उसके बाद आत्मा के अंदर परिवर्तन शुरू होगा। यह

परिवर्तन की प्रोसेस है। कोई चमत्कार नहीं होगा परिवर्तन में। यह करना होगा। और यह इस ही संगम युग में आत्मा का अभ्यास है कि मुझे क्या धारण करना है और क्या नहीं? हर प्रकार के सभी मायावी अस्तित्व को मुक्ति देने का यह एक ही संगम युग है। क्योंकि इस ही संगम युग में आत्मा को स्वयं की पहचान मिलती है। और मायावी अस्तित्वों की पहचान मिलती है। इसलिए आज से अंत तक सभी आत्माएं अपनी रोज चेकिंग करना। आज दिन भर में कितने विपरीत मायावी अस्तित्वों को मुक्ति दी। और क्या करना बाकी है? जितना जितना स्वयं चेकिंग करेंगे उतनी उतनी शुद्धि होती जाएगी।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः